नादान दोस्त

पाठ का सार -

प्रस्तुत पाठ 'नादान दोस्त' 'प्रेमचंद' जी द्वारा रचित कहानी है। कहानी में बाल मनोभावों का अत्यंत सुन्दर चित्रण किया गया है। केशव और श्यामा कहानी के मुख्य पात्र हैं। दोनों बच्चे नादान और भोले-भाले हैं। उनके घर के कार्निस के ऊपर चिड़िया ने अपने अंडें रखे थे। दोनों बच्चें अंडों को लेकर काफी उत्साहित रहते हैं। वे रोज़ अंडों की निगरानी करते और अंडों की सुरक्षा के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाते। अपनी योजनाओं के बारे में वे कभी किसी से भी नहीं कहते। एक दिन मौका पाकर दोनों माँ से छुपकर अंडों को देखने गए। केशव ने अंडों को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें कपड़े के तह के ऊपर आराम से रख दिया। फिर उसे धूप से बचाने के लिए उसके ऊपर टोकड़ी भी रखी। फिर चिड़िया के लिए दाना और पानी का इंतज़ाम भी किया। फिर दोनों भाई-बहन निश्चिंत होकर सो गए परंतु जब दोनों की आँख खुली तो उन्होंने अंडों को टूटा हुआ पाया। दोनों बच्चों के दुःख का ठिकाना न था। इतने में माँ जग कर आ जाती है। दोनों एक दूसरे को इस घटना का दोषी मानते हैं। बच्चें माँ को सारी सच्चाई बता देते हैं। उनके सरल स्वभाव पर माँ को हँसी आ जाती है। वे उन्हें बताती हैं कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। जब कोई चिड़िया के बच्चों को हाथ लगाता है तो वह अंडों को तोड़ देती है। यह सुनकर बच्चे रो पड़े। उन्हें इस बात का दुख था कि उनके कारण तीन अंडे खराब हुए और उन्होंने चिड़िया के बच्चों को पालने का जो सपना देखा था वह पूरा नहीं हो सका। बहुत दिनों तक वो इस घटना को याद कर रोते रहें। वे तो केवल उन बच्चों की सुरक्षा करना चाहते थे परंतु अज्ञानता के कारण उनसे यह गलती हो गई।

केशव की चारित्रिक विशेषताएँ -

(1) अज्ञान / नादान – केशव एक छोटा-सा अबोध बालक है। अपनी नादानी के कारण ही वह माँ से छुप कर अंडों की देखभाल करता था। अगर उसे पहले यह पता होता कि अंडों की देखभाल करने से अंडों को हानि पहुँचेगी तो वह ऐसा कभी न करता।
(2) मेहनती - केशव मेहनती है। अंडों की सुरक्षा के लिए उसने तरह-तरह से प्रयत्न किए। इसके लिए उसने कड़ी मेहनत की।
(3) ज़िम्मेदार - केशव ने अंडों की ज़िम्मेदारी बहुत अच्छे से उठाई। यह उसका दुर्भाग्य था कि अंडों की सुरक्षा न हो सकी। परंतु उसने पूरी ज़िम्दारी के साथ अंडों के आराम की पूरी व्यवस्था की।

श्यामा की चारित्रिक विशेषताएँ -

(1) नासमझ – श्यामा एक छोटी सी बच्ची है। अतः समझदारी का अभाव होना स्वाभाविक है। कभी-कभी अपने स्वभाव के अनुसार वह कुछ कार्य को गलत कर देती है।
(2) भावुक – श्यामा का हृदय अत्यंत कोमल है। अतः कभी-कभी उसका मन भावुक हो जाता है। जब चिड़िया के अंडों को वह टूटा हुआ देखती है तब उसका कोमल हृदय भावुक हो उठता है।
(3) मेहनती - श्यामा बहुत मेहनती है। जब बात अंडों की सुरक्षा की आती है तब वह अंडों के हित के लिए हर समंभव प्रयास करती है।

पाठ का उद्देश्य -

(1) पाठ में बच्चों के मनोभावों का मनोहर चित्रण किया गया है।
(2) पाठ के माध्यम से माता-पिता द्वारा बच्चों को दी जाने वाली सीख की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

पाठ का संदेश -

पाठ के माध्यम से प्रेमचंद जी ने हमें यह संदेश दिया है कि नादानी में भलाई के लिए किया गया कार्य भी हानिकारक हो सकता है। हमें जब तक किसी विषय पर पूरी जानकारी न हो तब तक उस कार्य को नहीं करना चाहिए। किसी भी कार्य को करने से पूर्व बड़ों या अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।